तरह बचो और तोहीद पर जम जाओ।'' हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का वाक़ा तो साफ़ साफ़ क़ुरआन मजीद में ब्यान कर दिया गया है। कि इन्तक़ाल के वक़्त लड़कों को बुलवाया और इन्तक़ाल के वक़्त की तकलीफ होने के बावजूद यह ज़रूरी समझा कि अपने लड़कों से यह इतमिनान और यक़ीन हासिल करले कि ख़ुदाए वाहिद यानी की अल्लाह तआला के सिवाए किसी और को माबूद नही समझेंगे और नही बनाएँगे। उन्होंने साफ़ साफ़ कहा कि ऐ मेरे बेटो! बताओ मेरे बाद किस की इबादत करोगे। वह बेचैन थे कि उन की आँखे बंद होने पर उनके बेटे दुनिया की चमक दमक और ज़िन्दगी के लुत्फ़ो राहत में किसी गैर अल्लाह को ख़ुदा न समझने लगें। चुनांचे बेटों ने जब यक़ीन दिलाया कि उसी अक़ीदे और इबादत पर क़ायम रहेंगे जो बाप, दादा नबीयों, यानी हज़रत इब्राहिम अलैहि स्सलाम और हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम का रहा है। तो उनको चैन आया।

मौलाना अली मियाँ साहब नदवी रहमतुल्लाह अलैह ने इस बात को बड़ी ताक़त के साथ अपनी तक़रीर में कहा और हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का अपने बेटों से जो इस सिलसिले में मकालमा हुवा उसको पेश किया।

यह तक़रीर छप कर आगई है। उसको अमूमी नफ़े के लिये रिसाले की शक्ल में हिन्दी तरजुमे के साथ पेश किया जा रहा है।

तरजुमा व इशाअत भाई ज़काउल्लाह ख़ाँ साहब इन्दौरी कर रहे हैं। जो ऐसे मुफ़ीद काम बराबर करते रहते हैं। अल्लाह तआला उनको जज़ा अता फ़रमाए।

(मौलाना) मुहम्मद राबे हसनी नदवी

नाज़िम नदवतुलउलमा, लखनऊ (उ.प्र.) ७ जून २००१ लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

आऊज़ो बिल्लाहि मिनशशैतानिररज़ीम ।

बिस्मिल्ला हिररहमा निररहीम ।

''अम कुनतुम शोहदाअ इज़ हज़र याक़ूबल मौतु इज़ क़ाला लिबनीहि माताअ बुदूना मिम बादी । क़ालू नाबुदु इलाह का व इलाहा आबाईका इब्राहिमा व इस्माईला व इस्हाक़ा इलाह वाहिद, वनहनु लह् मुसलिमून ''

सूरह बक़र पारा १

मतलब :- क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जिस वक़्त याक़ूब अलैहिस्सलाम का आख़री वक़्त आया और जिस वक़्त उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि तुम लोग मेरे मरने के बाद किस की पुरसतिश (इबादत) करोगे। उन्होंने बिल इत्तिफ़ाक़ जवाब दिया कि हम उसकी इबादत करेंगे जिसकी आप और आप के बुज़ुर्ग हज़रत इब्राहिम अलैहीस्सलाम व इस्माईल अलैहीस्सलाम व इस्हाक़ अलैहीस्सलाम इबादत (पुरसतिश) करते आए हैं यानी वही माबूद जो वाहदहू लाशरीक है (वही ख़ुदा जो अकेला है उसकी ही इबादत करेंगे) और हम उसी की इताअत पर क़ायम रहेंगें (उसी का हुक्म मानते रहेंगे)।

जो चीज़ सामने बार बार आती है। कितनी दुकानों के साईन बोर्ड हैं जो हर वक़्त नज़र से गुज़रते हैं। अगर पूछा जाए कि फ़लाँ बाज़ार से जिस से आप रोज़ाना गुज़रते हैं और कई बार गुज़रते है। उसके दाएँ तरफ़ की दुकान पर एक साईन बोर्ड लगा हुआ है वह क्या है ? आप कहेंगे हमने कभी ग़ौर से पढ़ा नहीं। यह अकसर उन चीज़ों के साथ पेश आता है जिस से वास्ता पड़ता रहता है और निगाहें जिस की आदी हो जाती हैं क़ुरआन मजीद की यह आयत

जो पहले ही पारे की आयत है और उसका तरजुमा आम तौर पर क़ुरआन मज़ीद के तरजुमे में मौजूद है अल्लाह तआला उन तरजुमा करने वालों को ज़ज़ाए ख़ैर दे कि इन तरजुमों के ज़रीये से मुसलमान पढ़ते है और जो अरबी ज़बान से वाक़िफ़ है वह ख़ुद उनको पढ़ते और समझते है। लेकिन बहुत कम ग़ौर करने की नोबत आई होगी कि अल्लाह तआला ने इस एहतमाम के साथ (अगर यह लफ़्ज़ गैर शायान शान और बे अदबी के न हो तो में कहूँगा कि अल्लाह तआला ने) इस वाक़े को बयान करने को क्यों तरजीह अता फ़रमाई (क्यों ख़ास तौर से ब्यान फ़रमाया) और अल्लाह तआला जिस की शान यह है कि जो चीज़ भी उससे ताल्लुक़ रखती है वह ज़रुरी है मानवी है। मुनासिब हाल है। मुनासिब वक़्त है और फ़ितरत का तक़ाज़ा है। इस में इस ज़रीये से अल्लाह तआला का क़ुर्ब (नज़दीकी) हासिल किया जा सकता है और बहुत से ख़तरों से छुटकारा पाया जा सकता है। बज़ाहिर मालूम होता है कि अगर कोई ग़ौर न करें तो कहैगा कि एक पेग़मबर के इन्तक़ाल के वक़्त का वाक़ा है बयान किया जा रहा है। इस की क़ानूनी इलमी, तारीखी, तहज़ीबी, और मानवी तौर पर क्या एहमियत है। लेकिन अल्लाह तआला जिस चीज़ को चुने और अपने इस कलाम में जिस को क़यामत तक बाक़ी रहना है। और दुनिया के तमाम इंसानों को नही बल्कि जिनको अल्लाह तआला तोफ़ीक़ दें। बातोफ़ीक़ इंसानों को पढ़ना है बारबार पढ़ना है तो अल्लाह तआला उन्ही चीज़ों का ज़िक्र फरमाता है। जिनमें ग़ौर करने का मवाद है। ग़ौर करने का सामान है और जिस में हज़ारों नसीहत और हिकमते है।

सभी दुनिया से जाते है। सबजाने वाले है। जिन की जितनी भी ज़िन्दगी है। बहरे हाल इस दुनिया को '' अलविदा'' (छोड़ना है) कहना है। पेग़मबरों के लिये भी यही है।

'' वमा मुहम्मदुन इल्ला रसूल, क़द ख़लत मिन क़बले हिर रोसुल '' (४ पारा) (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम नामी, इस्मे ग्रामी लेकर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कौन हैं अल्लाह के रसूल है आप से पहले भी पैग़म्बर थे वे सब दुनिया से चले गए मतलब यह है कि आपको भी एक मरतबा दुनिया को ''अलविदा'' कहना है और दुनिया को छोड़ना है और उस मुक़ाम पर जाना है जो अल्लाह तआला ने आपके (हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहोअलैही वसल्लम के लिए) मुक़द्दर और मुख़तिस (ख़ास) फ़रमाया है।

अल्लाह तआला के एक पैग़म्बर के इन्तक़ाल का एक वाक़ा उसको क़यामत तक के लिये क्यों हमेशा याद रखने के लिये लिखा जा रहा है और उसको क्यों क़ाबिले तवज्जह क़रार दिया गया है। यह सोचने और ग़ौर करने की बात है मगर बहुत सी बाते बहुत आसान मालूम होती हैं तो उनको छोड़ दिया जाता है। हम में अकसर का मामला भी यही है कि हमने ग़ौर नही किया होगा कि अल्लाह तआला इस वाक़े को क्यों बयान फ़रमा रहा है। मुसलमानों को ख़िताब करके क़ुरआन मजीद के पढ़ने वालो को ख़िताब करके (आऊज़ो बिल्लाहि मिनशशैतानिररजीम) ''अम कुनतुम शोहदाअइज़ हज़र याक़ूबलमौत''। तुम उस वक्त मौजूद थे जब याक़ूब (अलैहिस्सलाम) का आख़री वक़्त आया। यह क़ुरआन मजीद

का तरीक़ा ब्यान और ख़ास असलोब है कि वह जब किसी चीज़ को आँखों के सामने लाना चाहता है ताकि वह मुशाहिद बन जाए तो इस तरह ख़िताब करता है कि तुम उस वक्त थे जब याक़ूब अलैहिस्सलाम का आख़री वक्त आया। उनका दम वापसी था। ''इज़ क़ालालिबनी हिमाताअ बुदना मिमबादी'' जब कि उन्होंने अपने लड़को से कहा कि तुम मुझे यह बता दो कि तुम मेरे बाद किस की इबादत करोगे ? अब यहीं से आप सोचीये कि मामला है हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का और याक़ूब अलैहिस्सलाम कौन है ? याक़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम, नबी इस्हाक़ के बेटे, नबी इब्राहीम के पौते, नबी इस्माईल के भतीजे और नबी यूसुफ़ के बाप। नबी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम (इन के दादा) कैसे नबी है। हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (जिन को अल्लाह तआला अपना दोस्त कहता है) हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जो कि हमारे प्यारे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जद्दे अमजद है। उनके यह भतीजे हैं और ख़ुद भी पेग़म्बर है। ख़ुद पेगम्बर के बाप भी है (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वालिद बुज़ुर्गवार) क्या माहौल है उस घर का इस का आप ज़रा ख़्याल कीजिये !

किसी आलिम के, किसी शेख़ वक्त के, किसी मुसलह के, यहाँ तक के किसी वाज़ कहने वाले के, या किसी पढ़े लिखे मुसलमान के मुतालिक़ भी यह ख़्याल नही होता कि वह अपने इन्तक़ाल के वक्त यह बात पूछेगा अल्लाह तआला का नाम उनको सिखाया गया है कलमा पढ़ते है। अपने को मुसलमान कहते हैं सबके नाम मुसलमान जैसे है। और फिर उसमें जो लोग जवान हो गये है। या

www.abulhasanalinadwi.org

इस से पहले अल्लाह तआला ने तोफ़ीक़ दी है घरो के माहौल पर दिनी फ़िज़ा छाई हुई है। वे मस्जिदों में जाते है नमाज़ पढ़ते हैं। और कुछ नहीं तो कम अज़ कम अपने माँ बाप को नमाज़ पढ़ते हुए देखते हैं और अपने घरों में अल्लाह और उसके रसूल का ज़िक्र सुनते हैं। तो उन से इस के पूछने की क्या ज़रुरत पैश आई। पूछने की बातें बहुत है। और सब जानते है अगर दुनिया में वसियतनामों को ही जमा किया जाए तो एक बड़ी लायब्रेरी तैय्यार हो जाएगी तारीख़ और आदबियात और इंसानी ज़रुरियात और इंसानी तक़ाज़ों का एक बहुत बड़ा ज़ख़ीरा सामने आ जाए। यह काम अगर किसी को फ़ुरसत हो तो यह कर सकता है। यह किताबों में जो अलग अलग तबक़ों के लोगों की जो वसीयतें लिखी है। उनको जमा कर दे। उलमा, मशाइख, मुसलेहीन, दाइय्यान और वालियाने रियासत और हुकुमत वालों की वसीयतों को एक जगह जमा करे तो इंसानी एहसासात और इंसान की अक़्ल, दानाई का और अपनी औलाद से वारिसों के ताल्लुक़ का एक ऐसा नक़्शा सामने आ जाए कि उससे इंसानी नफ़्सियात की बड़ी अचम्भे वाली बाते मालूम हो जाए और मालूम हो कि इंसानों ने एक जैसी बातें वसियत में कितनी लिखी हैं। वसियत सेकड़ों ने नही हज़ारो ने नही लाखों ने की है। उनमें अकसर में यह दिखेगा कि बच्चों को जमा किया और कहा कि देखो (सब से ज़्यादा जो कान में पड़ी है और किताबों में देखी हुई है कि जाने वाले बाप ने सब्र करने वाले बाप ने जो दुनिया से जाने वाला है उसने अपने बच्चों को जमा किया सब शरीफ़ज़ादे अच्छे खानदान के लोग और उन मे कई पढ़े लिखे और उन में कितने ही तरबियत

याफ़्ता। उन से हम ने आमतौर पर यह देखा जो किताबों में देखा वह यह कि उनसे कह दो कि बेटों, लड़ना, झगड़ना नहीं, इत्तहाद, इत्तफ़ाक़ से रहना, शराफ़त से रहना, या यह मिलता है कि देखो बेटों, फ़लाँ जगह मैनें रक़म दबा रखी है तुम्हारे लिये, अभी तक बताया नही था फ़लाँ जगह तुम खोदना तुम को वहाँ ख़ज़ाना मिलेगा। वह दफ़ीना है, या यह कहा कि देखो हमारे इतना क़र्ज़ दूसरों पर आता है लिखलो उसका फ़लाँ फ़लाँ आदमियों के ज़ुम्मे हमारी इतनी रक़म है उसको वसूल कर लेना और यह दस्तावेज़ है उनका इक़रार नामा है यह दिखाना या बहुत ज़्यादा अगर एहतियात और तक़वा हुआ तो यह कहा कि देखो बेटो, मेरे बच्चो और मेरी आँखों के तारो। मुझ पर इतना क़र्ज़ा है उसको अदा कर देना भूलना मत !

जिनको अल्लाह तआला का बहुत ज़्यादा डर है मुत्तक़ी लोग हैं वह यह कहते है यह याक़ूब अलैहिस्सलाम की वसियत है। सोचीये ज़रा अपने ज़हन को हाज़िर करके और उस वक़्त को सामने लाकर यह कौन लोग हैं जिन को वसियत की जा रही है यह नबी ज़ादे है, पैग़म्बरों की औलाद। वली ज़ादे नही है वली ज़ादे भी बड़ी चीज़ समझे जाते है, बुज़ुर्ग ज़ादे भी बड़ी चीज़ समझे जाते है, आलिम ज़ादे भी बड़ी चीज़ समझे जाते हैं। तो इस पर हमारा ईमान होना चाहिये कि यह पैग़म्बर ज़ादे है। अगर इस पर हमारा ईमान नहीं तो हमारा ईमान कच्चा और अधूरा है। जो कि उस ज़माने में सब से बढ़ कर क़ाबिले इज़्ज़त, क़ाबिले मुहब्बत, क़ाबिले भरोसा कोई और ईसानी मजमूआ नही हो सकता यह सब नबी के बेटे, नबी के पौते,

नबी के भतीजे और उन के घरो का माहौल क्या है। अपने घरो में देखा है नमाज़े हो रही है अल्लाह का नाम लिया जा रहा है। ज़िक्र हो रहा है दुआओ में रोया जा रहा है। अपनी माओं को देख रहे है कि बड़ी गिड़गिड़ा कर उन के लिये दुआएँ कर रही है और उन घरों में ख़ुदा के नाम के सिवाए कोई नाम नही लिया गया और सुना भी नही। उन्होंने दुनिया में और भी कोई असर रखता है यह सुना ही नही। और कोई दूसरा (सिवाए अल्लाह के) नफ़ा, नुक़सान का मालिक है और उस से कुछ मांगा जा सकता है कुछ उस से उम्मीद की जा सकती है तोहीद (अल्लाह तआला को एक मानना) के सिवाए कोई अक़ीदा, नमाज़ रोज़े के सिवाए कोई इबादत और अल्लाह के ख़ौफ और मुहब्बत के सिवाए कोई उन्होंने दावत सुनी ही नही। लेकिन क्या बात थी। ''इश्क़ अस्त व हज़ार बद गुमानी'' जब यक़ीन होता है। आदमी को किसी बात की एहमियत (इम्पार्टेन्स) होता है तो फिर वह अक़ली चीज़ो और क़यासियात पर अमल नही करता। यही फ़र्क़ है अगर आदमी बीमार है वाक़ई बीमार है तो सारी एहतियात उठ जाती है कितना ही वह घमन्डी हो कितना ही वह ख़ुद्दार हो कितना ही ज़ब्त करने वाला हो, कितना ही सब्र करने वाला हो, कितना ही बरदाश्त करने वाला हो, वह अपने लड़को से कह देता है और अपने रिश्तेदारों को बता देता है कि मुझे यह तकलीफ़ है। डॉक्टर को बुलाओ। हकीम साहब को दिखाओ। इसी तरीक़े से अगर कोई भूका होता है। वाक़ई अगर भूक है । तो फिर वहाँ पर ग़ैरियत नही चलती कि हम किस मुंह से कहें कि खाना लाओ। खाने का वक़्त हो गया है बड़े बड़े अमीर ज़ादे, नवाब ज़ादे

और वालियान रियासत हुक्मा जो इन सब चीज़ों से उपर समझे जाते हैं वह भी ऐसे मौक़े पर अपनी भूक का एहसास ज़ाहिर कर देते हैं और खाना माँग लेते हैं तो सारा मामला एहमियत के एहसास का है (बात की इम्पार्टेन्स का है) तो बताईये कि हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने क्यों अपने लड़को को जमा किया और उन से पूछा ! आख़िरी वक़्त है और थोड़ा ही वक़्त है बात करने का इस को इस दुनिया से जाने वाले ख़ुद भी समझते हैं और वह ख़ुदा का पेग़म्बर जो मुलहिम मिनल्लाह (अल्लाह तआला की तरफ़ से जिस को इलहाम होता है) जिस पर वही नाज़िल होती है उसको क्यों न इस का एहसास होगा कि बस अब चन्द ही मिनट के बाद दुनिया से रुख़सत होने वाला हूँ। इन बेटों, पोतों को बुलाकर उनसे बात करने की बात क्या हो सकती थी। तो हमारी समझमें तो यही आई है कि और यह हमने देखा कि किताबों में वसियत नामों में जाने वाले की बातचीत, रिकार्ड अगर होतो रिकार्ड (लिखाहुवाहोतो) वरना जिन लोगों ने देखा है जिन को इत्तफ़ाक़ हुवा है सब जानते हैं कि यही कहा गया है देखो भाई मिल जुल कर रहना, तहज़ीब के साथ रहना, अपनी माँ का हक़ अदा करना, अज़ीज़ों का ख़्याल रखना, सिला रहमी का ख़्याल रखना वग़ैरह वग़ैरह !

सैकड़ों बरस और हज़ारो बरस से यह दौर चल रहा है कि मौक़े मौक़े पर इन बातों का इतमिनान हासिल किया जाता है लेकिन क्या बात है। बात यही है जिसकी दिल से लगी हुई बात होती है। जिसकी ख़ास एहमियत होती है। जिसको आदमी फ़ैसला कुन और ज़रूरी समझता है। जिसको समझता है कि यह हमेशा के लिये

अच्छी बात है या बुरी बात है उसकी तरफ़ पहले ध्यान देता है। किसी चीज़ को चुनने का उसकी एहमियत के एहसास का है हमारी पूरी ज़िन्दगी इस पर चल रही है पचास काम हैं कौम के। हम इन में से किसी का इंकार नही करते।

गुनाहगार जो आपसे बात (तक़रीर) कर रहा है। ख़ुद भी मेरी ज़िन्दगी ऐसी है जिससे लोग वाक़िफ़ हैं में कितनी अंजुमनो का ज़ुम्मेदार हूँ, बाज़ में शरीक हूँ (तारीफ़ के लिये में नही कहता) राबतए अदब इस्लामी है उसके और मजलिस तहक़ीक़ात व नशरयाते इस्लाम और सब से बढ़ कर आल इन्डिया मुसलिम परसनल लॉ बोर्ड है और ऐसे ही और भी कई हिन्दुस्तानी और हिन्दुस्तान से बाहर की तनज़ीमों से मेरा ताल्लुक़ है।

लेकिन में दीनी तालीम कोनसिल और अंजुमन तालीमाते दीन के प्लेट फ़ार्म से मुसलमानो को यह पैग़ाम (बात)देता हूँ कि अपने बच्चों के दीन और ईमान की हिफ़ाज़त, दीनो ईमान की पहचान और फिर उसकी हिफ़ाज़त और फिर उसकी ग़ैरत और फिर उस पर ज़िन्दगी गुज़ारने और उस पर दुनिया से रुख़सत के काम को सब से ज़्यादा एहमियत दें। इस के लिये इससे बेहतर वाक़ा नहीं हो सकता जो मेंने आपको सुनाया। याक़ूब अलैहिस्सलाम ने अपने बच्चों को कहा। उनके पौते भी होगे इसलिये की बड़ी उम्र में इन्तक़ाल हुआ उस ज़माने में लम्बी उमरें हुवा करती थीं। घर भरा होगा उसमें बेटे पौते, नवासे, भांजे, भतीजे इन सब को शामिल समझये अरबी का लफ़्ज़ 'लि बनी' है जो इन सब के लिये आता है। ''अम कुन तुमशोहदाअ इज़ हज़र याक़ूब लमोत'' ऐ क़ुरआन शरीफ़ के पढ़ने

वालो क्या तुम उस वक्त मौजूद थे। जब याकूब अलैहिस्सलाम का आख़री वक्त आया और मौत सामने आ खड़ी हुई गोया बिलकुल आख़री दम था (इज़ क़ाला लिबनीहिमाताबुदूनामिमबादी) उन्होंने अपने बच्चों से कहा कि बेटो मेरे जिगर के टुकड़ो लख्त हाये जिगर, नूरे नज़र यह बतादो एक बात में सुनना चाहता हूँ। एक बात का इतमिनान लेकर में दुनिया से जाना चाहता हूँ। कोई बात कुरआन शरीफ़ मे इस के इलावा कही नही गई। और उनकी तारीख़ में और शरीयत में भी नही मिलेगी और आसमानी सहीफ़ों में भी नहीं मिलेगी कि उन्होंने इस वक्त जब यह समझे कि चंद सांसों का मामला था। कितनी सांसे और बाक़ी है ''माता बोदुना मिमबादी'' कि तुम मेरे बाद किसकी इबादत करोगे सर किसके सामने झुकाओगे। में आपसे यक़ीन के साथ कहता हूँ कि गोया बिलकुल देख रहा हूँ और सुन रहा हूँ कि दुनिया में यह बात कोई भी आदमी भी कही कहेगा और याकूब अलैहिस्सलाम ने यह बात कही तो कुरआन मज़ीद ने उसका ज़िक्र किया तो उसकी बड़ी हिकमत है और उनके बेटो ने कुछ कहा होगा। लेकिन ग़ैरत तोहीद ने और नबुव्वत के शर्फ़ और एज़ाज़ ने इस वज़ह से कि इसका महल नही था कि कोई बीच में बात आजाए। मगर में क़यासन कहता हुँ कि एनमुमकिन है उन्होंने यह कहा होगा कि अब्बाजान, दादा जान, नानाजान, यह भी कोई पुछने की बात है कि आपने हमे सिखाया क्या था और हमने अपनी आँखो से देखा क्या और इस घर में होता क्या है और हम किस की औलाद है हमारी रगो में किस का ख़ून है। हमारे ज़हन में यह बात आती है। कि उन्होंने कहा होगा कि अब्बाजान, दादाजान, नानाजान आप

से हम यह पुछते है। आपने हमें सिखाया क्या है हमारे मुताल्लिक़ ख़तरा क्यों आपको पैदा हुआ लेकिन भाई 'इश्क अस्त व हज़ार बद गुमानी' जब किसी को किसी चीज़ की एहमियत होती है तो वह अक़लियात और मफ़ूज़ात पर नहीं चलता और फिर वह रुस्मो रिवाज पर भी नहीं चलता और वह उस वक़्त सब से बालातर होकर वह बात करता है जो दिल से लगी होती है।

यह बात जितनी दिल से लगी होनी चाहिये। मुसलमानो के दिल से नहीं लगी है। सारा खतरा इस बात का है कि इस बात की जो एहमियत होना चाहिए थी वह मुसलमानों में नहीं है यह बात मेरी तरफ़ मन्सूब करके कही गई है, में यह तसलीम करता हूँ कि मैनें कहा कि होना यह चाहिये था कि अगर मुसलमान अपने बेटे को (और मैनें कहीं कहा भी है) ख़्वाब में भी किसी दूसरे मज़हब की इबादत गाह की तरफ़ जाते हुए या किसी बड़े मुजसमें (स्टेचु) के सामने बड़े अदब के साथ खड़े होते हुए और सर झुकाते हुए देखे तो चीख़ उठे और सारा घर जमा हो जाए और एक हंगामा बरपा हो जाए। खैरियत है। खैरियत है। क्या देखा आपने ? क्या किसी कीड़े ने काट लिया ? या आपने कोई भूत परैत देखा ? इस पर आपका जवाब हो। नहीं नहीं, मैनें कुछ नहीं देखा। मैनें सिर्फ़ यह देखा कि मेरा बेटा मेरा लख्ते जिगर ग़ैर अल्लाह के सामने सर झुका रहा है। ग़ैर अल्लाह के आगे ऐसे अदब से खड़ा हुआ है जो तोहीद के खिलाफ़ है और ग़ैरत इस्लामी के खिलाफ़ है। मुसलमानों का मिज़ाज़ यह होना चाहिए सारा मामला इस वक़्त यह है जिस के लिये सारी कोशिशें की जा रही है। मैं इस बारे में एतबार वाला गवाह तसलीम

किया जा सकता हूँ कि शुरु से उसके कारकुनों में और खादिमों में हूँ और इसका नक्शा बनाने वालों में हूँ कि सारा डर जो इस वक्त पैदा हो गया है जो असल इस कोशिश का सबब है इस परेशानी और फ़िक्र का वह यह कि मुसलमानों के दिलों से यह बात लगी होनी चाहिये कि हमारी औलाद किस के सामने सर झुकाएगी, किस को इस दुनिया का खालिक और मालिक मानेगी, किसको नफ़ा और नुकसान का मालिक मानेगी, किस से हकीकी तौर पर डरेगी। यह बात जितनी मुसलमानों के दिल से लगी होनी चाहिये थी लगी हूई नही ह और सारा ख़तरा इसका है और सारा मामला दिल के ताअस्सुर का और दिल को एहमियत देने का है। यह सारी दुनिया यह सारी सियासत यह सारा हुकुमत का इंतज़ाम यह सारी सरगरमियाँ हैं वह सब दरजे के पहचानने पर लगी हुई हैं इन सब का जो मरकज़ है वह यह है कि कौन सी चीज़ कितनी अहम और ज़रूरी है कितनी कौन सी चीज़ कितनी तवज्जोह की हकदार है तो साफ़ साफ आपसे कहता हूँ कि सारा डर हिन्दुस्तान में जो पैदा हो गया है वह इस वजह से कि मुसलमानों के दिल से यह बात जितनी लगी हुई होनी चाहिए थी वह लगी हुई नहीं है। हमारी औलाद, हमारे बेटे, बेटी, हमारे पौते, पोती, हमारे भतीजे, भतीजी, हमारे भांजे, भानजी हमारे खानदान के मर्द औरत हमारे रिश्तेदार किस दीन पर रहेंगे और किस को खुदाए वाहिद मानेंगे और उनके क्या अकीदे होंगे और क्या वे इस्लाम पर ज़िन्दगी गुजारेंगे और इस्लाम पर ही वह इस दुनिया से जाएँगे और उनकी वफ़ात होगी या वह किसी और दीन को किसी और आकीदे को इख़तियार करेंगे।

सच्ची बात है कि जितनी फ़िक्र होनी चाहिये थी नहीं रही। मुसलमानो में कमज़ोरी पड़ गई है और सारा ख़तरा इस का है और यही नुक़सान पहुँचाने वाली चीज़ है और यही वह रास्ता है कि जिस से सारे फ़ितने आ सकते हैं सारी एतक़ादी कमज़ोरियाँ और गुमराहियाँ आ सकती है। सारे बुरे काम करने के तरीक़े मुसलमानो में आ सकते हैं। यहाँ तक की इस वजह से मज़हब छोड़ कर दूसरा मज़हब भी इख़्तयार किया जा सकता है और इरतदाद आ सकता है। अल्लाह तआला माफ़ फ़रमाए। यह लफ़्ज़ कहने की ज़रुरत पैश न आए। लेकिन इसी रास्ते से इरतदाद आया है और इसी रास्ते से मज़हबे इस्लाम छोड़कर दूसरा मज़हब क़बूल किया जा सकता है कि वह एहमियत और वह मुक़ाम इस को नही दिया गया। आइन्दा नस्ल की सीरत और अख़लाक़ और आइन्दा नस्ल के अक़ीदे और उसके दीन को वह एहमियत नहीं दी गई जो एहमियत आजकल की तालीम को दी गई है। जो एहमियत इम्तिहानात पास करने को दी गई है। जो एहमियत सेहत और तन्दुरुस्ती को दी गई है। आप क़ुरआन मजीद में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम व हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलम के वाक़े पर ग़ौर कीजिये। यह सोचने की बात है कि हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम एक बच्चे को ख़त्म कर देते है। और मार डालते हैं। वह एक मासूम बच्चा है उसकी जान ले लेते है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम इस वाक़े को देखते है। क़ुरआन मजीद में जो वाक़आत ब्यान किये गए हैं। वह असबाब बन सकते है जिस पर अमल हो सकता है। लेकिन कोई फ़क़ीही मसलक (यानी हमारे चारो फ़क़ही मसलक) भी और हदीस व सुन्नत भी और कोई आलिम

कोई मुफ़्ती इस का जवाब नहीं दे सकता है और यह नहीं कह सकता है कि आज भी यह हो सकता है। किसी बच्चे की जान लेना हराम है। लेकिन हज़रत खिज़्र अलैहिस्सलाम बच्चे की जान लेते हैं और मूसा अलैहिस्सलाम के सामने जान लेते हैं। और कुरआन मजीद इसका ज़िक्र करता है (सुरह क़हफ़ पारा १५-१६) हालाँ कि अब उस पर अमल नहीं हो सकता है। मगर इस वाक़े का ब्यान करने का मक़सद यह है कि ईमान इतनी बड़ी दौलत है कि उस के लिये अल्लाह के एक वली बन्दे ने ख़ुदा के एक नबी बन्दे के सामने (जो साहबे शरीअत हैं) बच्चे का गला घोट दिया। जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा कि अरे आपने यह क्या किया ? तो हज़रत खिज़्र अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि यह बच्चा फ़ितना बनने वाला था। अगर यह ज़िन्दा रहता तो अपने ख़ानदान के लिये फ़ितना बनता और ख़ानदान को कुफ़्र पर डाल देता। यह सोचने की बात है अल्लाह तआला ने यह वाक़ा क्यों सुनाया ? और कुरआन मजीद (जो कि क़यामत तक पढ़ी जाने वाली किताब है) उसमें क्यों ब्यान किया गया इसलिये कि मुसलमान यह समझे कि ईमान की कितनी बड़ी क़ीमत है (यानी जान से भी ज़्यादा क़ीमत ईमान की है) तो असल मर्ज़ जो इस वक़्त मुसलमानों का है वह यह है कि अपनी आईन्दा नसल के ईमान की जो फ़िक्र, एहमियत होनी चाहिये वह नहीं है (और जिसे बहुत ही दिल पर पत्थर रख कर और दिल को थाम कर कह दिया गया और माज़रत के साथ कि ईमान को ज़िन्दगी पर भी तरजीह देना चाहिये (जान से ज़्यादा ईमान की क़ीमत दिल में होना चाहिए)। वाक़ई ईमान का तक़ाज़ा यह है कि

माँ, बाप अपने लड़के, लड़की की ज़िन्दगी पर ईमान को तरजीह दें। (उसके बाईमान होने को) और जो मैनें हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम का वाक़ा सुनाया वह यही बताता है।

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का क़िस्सा अल्लाह तआला ने क्यों सुनाया और बड़े एहतमाम के साथ (अम कुनतुम शोहदाअ इज़ हज़र याक़ूबल मौत) क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे यानी अल्लाह तआला मनज़र सामने ला रहा है कि जब याक़ूब अलैहिस्सलाम का आख़री वक़्त आया तो बच्चों को जमा किया और कहा कि मेरे बच्चों यह बता दो कि मेरे बाद तुम किस की इबादत करोगे ? में कहता हूँ कि यक़ीनन कहा होगा कि अब्बा जान दादा जान यह भी पूछने की बात है। अरे हम से आप पुछ रहे है। यह तो काफ़िर क़बीले से पूछा जाए। हम कौन है। हम आपके पाले हुए। आपके ज़िगर के टुकड़े आपही के जिस्मों के टुकड़े और हमारे बारे में कोई दूसरा ख़्याल ही नही हो सकता है उन्होंने यह सब कहा होगा। मगर अल्लाह तआला की ग़ैरते तोहीद ने इतना फ़स्ल भी गवारा नही किया और फ़ौरन नक़ल कर दिया ''नाबोद इलाहका व इलाहु आबाइक० ऐ अब्बा जान ! दादा जान ! हम आपके बाप के ! आपके चचा के आपके दादा के माबूद की ही इबादत करेंगे और किसी की नही करेंगे तो हज़रत याक़ुब अलैहिस्सलाम ने कहा कि में यही सुनना चाहता था। मेरी पीठ क़ब्र से न लगती जब तक यह इतमिनान लेकर न जाता। बस आज मुसलमानों को इसकी ज़रुरत है कि वह अपनी औलाद के बाईमान और तोहीद के क़ाईल होने की (तोहीद ख़ालिस का क़ाईल होने की) पूरी पूरी फ़िक्र करें।

मैं साफ़ कहता हूँ कि ख़ुदा के सिवाए न फ़रिशते न ख़ुदा के पैग़म्बर, न औलिया, न कुतुब, न अबदाल, न ग़ोस, कोई किसी का इस मुल्क में, अल्लाह की सलतनत में, किसी दूसरे का तसररुफ़ नही है (अला लहुल ख़ल्क़वल अम्र) याद रखो कि अल्लाह तआला ही का काम है पैदा करना और उसी का काम है चलाना। दुनिया वालों को न कोई औलाद दे सकता है, ना ही क़िसमत बना या बिगाड़ सकता है। तमाम औलिया अल्लाह सर आँखों पर। उनके हालात और उनके लिये दिल में जो मुक़ाम है वह लोग जानते हैं जिन्होंने मेरी किताबे पढ़ी हैं। मुझे बुज़ुरगाने दीन के हालात लिखने की सआदत हासिल हुई है। हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती (रह.) भी है ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया (रह.) भी है महबूब इलाही भी और फिर हज़रत मुजद्दिद अलफ़ सानी (रह.) भी है। शाह वली उल्लाह सा. (रह.) भी हैं। अल्लाह तआला ने तोफ़ीक़ दी। हम ने उनके हालात और मुनाक़िब (ख़ुबियाँ) लिखे हैं। लेकिन यह अक़ीदा अपनी जगह पर है कि इस दुनिया का चलाने वाला सिर्फ़ ख़ुदा है (अलालहुल ख़ल्क़ वल अम्र) वही नफ़े नुक़सान का मालिक है वही ज़िन्दगी और मौत का मालिक है। वही औलाद देने वाला, रिज़्क देने वाला है वही क़िसमत बनाने और बिगाड़ने वाला है। सारा मसला यह है कि मुलसमानों के दिल में ईमान और अक़ीदए तोहीद (एक अल्लाह को दिलो जान से मानना) की वह एहमियत (इम्पार्टेन्स) पैदा हो जाए कि वह सब गवारा करने के लिये तैय्यार है। मगर यह बात की मेरा बेटा, मेरी बेटी, भतीजा, मेरी भतीजी, मेरी पोती, मेरा पोता, (जिन पर इख़्तियार है)। वे ग़ैर अल्लाह को इस ममलकत

में इस दुनिया के कारख़ाने आलम में शरीक समझता है। यह बिल्कुल गवारा नहीं।

आज कल ख़तरा पैदा हो गया है इस वक़्त की कोर्स की किताबों से और मेथॉलाजी तक इस में दाख़िल हो गई है हिन्दू देव माला इस में दाख़िल हो गई है और यह ख़तरा पैदा हो गया है कि आपका बच्चा, नाम भी मुसलमानों जैसा हो, लिबास भी मुसलमानों जैसा हो, उर्दू ज़बान भी जानता हो और अदब भी करता हो और तहज़ीब वाला भी हो और ज़हीन (तेज़ दिमाग़ वाला) भी हो। लेकिन अल्लाह तआला को एक मानने के बारे में, उस का ज़हन साफ़ नहीं हो। उसके दिमाग़ के अन्दर कोई न कोई हिन्दू देव माला की बात बैठी हुई हो (कृष्णजी भी ऐसा कर सकते हैं। गणेशजी भी ऐसा कर सकते हैं। इसलिये कि वह क़िस्से पढ़ेगा और में ने किसी कोर्स की किताब में देखा है कि सब जमा हुए और कहा कौन सब से बड़ा देवता है ? उन्होंने कहाँ जो इस दुनिया का इतनी देर में चक्कर लगाले – मैनें पढ़ा है कि गणेश जी उठे और उतनी ही देर में दुनिया का चक्कर लगाकर आ गए। उन्होंने कहा कि यह बड़े है। सारी हिन्दू मेथॉलाजी एसे क़िस्सों से भरी है। इस के सिवाए एक और मेथॉलाजी थी (रोमनमेथालॉजी) वह भी सब मुशरिकाना क़िस्सो और ख़्यालात से भरी हुई है। में चाहता हूँ कि बच्चों के कपड़े बनाने से हज़ार बार ज़्यादा और बच्चा बीमार हो जाए तो उसका बेहतर से बेहतर इलाज करने से सेकड़ो बार ज़्यादा और अपने बच्चों को नौकरी के क़ाबिल बनाने से लाख बार ज़्यादा यह ज़रुरी समझा जाए कि उनको पक्का और सच्चा मुसलमान बनाया जाए। मैं साफ़ कहता हूँ कि अपनी

औलाद को यहाँ तक तैयार कर लिया जाए कि वह कहें कि मेरी गर्दन उड़ा दी जाए, मुझे गोली मार दी जाए मगर में शिर्क नहीं करुँगा। मैं बुत पुरस्ती नहीं करुँगा। मैं हिन्दू मेथालॉजी नहीं मानूंगा। यह जब तक नहीं होगा। हिन्दुस्तान में रहना। इसी हिन्दुस्तान में नहीं किसी मुल्क में भी रहना ख़तरनाक है।

मैनें अपने इरादे पर शायद इस्तहक़ाक़ से ज़्यादा वक़्त ले लिया। लेकिन यह में ने चाहा कि कम से कम यह बात आप यहाँ से लेकर जाएँ कि ''सब से ज़्यादा फ़िक्र की चीज़ और तवज्जाह की चीज़ आईन्दा आपनी औलाद का ईमान है ईमान और अक़ीदए तोहीद (अल्लाह तआला को एक मानना) और अक़ीदए रिसालत (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आख़री रसूले बरहक़ मानना) पर ईमान लाना। सिर्फ़ ईमान लाना ही नहीं ब्लकि आप (सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम) से इश्को मुहब्बत और आप का ख़ुदा के बाद सब से ज़्यादा एहतराम करना है वह एहतरामो इज़्ज़त और आपको इस दुनिया का निज़ात दहिन्दा और दुनिया के लिये बाइसे रहमत (रहमतुल्लिलआलमीन) मानना और कहना और आपकी शफ़ाअत का शौक़ और उसका अरमान और आप (सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम) के हाथ से जामे कौसर पीने की तमन्ना और आपके सामने सरख़ुरु (कामयाब) होने की तमन्ना यह हमारे और हमारी औलाद की दिलों में पैदा हो। यह चीज़ अगर पैदा हो गई तो सब मसले हल हैं।

इसीलिये आपको यहाँ बुलाया गया है। और यही पैग़ाम लेकर आप यहाँ से जाएँगे कि पहले औलाद का ईमान और उनके

ईमान की दुरस्तगी उनके अक़ीदे की दुरस्तगी उनका इस्लाम पर क़ायम रहना हो। बल्कि इस्लाम पर फ़ख्र करना और इसी पर जीने मरने की आरज़ू और तमन्ना करना और दुआ करना कि ऐ अल्लाह हमारी इन औलादों को ईमान पर सलामत रख और ईमान पर इस दुनिया से उठा। यह ज़रूरी है और यही पैग़ाम है और दीनी अदारों और मुसलमानों की ज़िन्दगी का मक़सद है।

(वमा अलेनाइल्लल बलाग़)

माख़ूज़: माहनामा ''रिज़वान'' लखनऊ माह जून २००१

तालिबे दीन

अल्लाह अल्लाह अपनी क़िस्मत मदरसे में आ गया
ऐसा लगता है कि दुनिया ही में जन्नत पा गया
मदरसे को छोड़ कर अब में न जाऊँगा कहीं
छोड़ कर में अपने घर को पढ़ने आया हूँ यहीं
सारे उस्ताद और तुलबा सबके चहरों पर है नूर
रोशनीए इल्म फैलेगी यहाँ से दूर दूर
कितना है माहौल अच्छा कितनी प्यारी ज़िन्दगी
रात-दिन ज़िक्रे ख़ुदा है हर नफ़स यादे नबी
मेरे अल्लाह मेरे अब्बाजान को बेहतर सिला
तू अता कर मदरसे में हो गया है दाख़ला
इल्म नाफ़े तू अता कर मुझको ऐ मेरे ख़ुदा

www.abulhasanalinadwi.org